'लहर' लघु पत्रिका पर विशेष

ISSN 2394-1723
मूल्य : 40 रुपये

वागर्थ

वर्ष 32 अंक 365 अप्रैल–2026

समकालीन साहित्य में गांव की अनुपस्थिति

मिथिलेश्वर अजय तिवारी अष्टभुजा शुक्ल
भगवानदास मोरवाल रणेंद्र प्रवीण कुमार
प्रस्तुति : श्रद्धांजलि सिंह

कहानियां

सैली बलजीत हुस्न तबस्सुम निहां
लोकमित्र गौतम जितेन ठाकुर
पार्वती तिर्की सुशील कुमार
जुपाक सुभद्रा (तेलुगु)

भारतीय भाषा परिषद

ISSN : 2394-1723

वागर्थ

भारतीय भाषा परिषद की मासिक पत्रिका

वर्ष 32, अंक 365, अप्रैल 2026

संपादक
शंभुनाथ

प्रबंध संपादक
प्रदीप चोपड़ा

प्रकाशक
डॉ. कुसुम खेमानी

संपादन सहयोग
अंक सज्जा
सुशील कान्ति

ऑनलाइन मल्टीमीडिया संपादक
उपमा ऋचा
upmamcreat@gmail.com

संपादकीय विभाग
36 ए, शेक्सपियर सरणी
कोलकाता–700017
vagarth.hindi@gmail.com
7449503734
(दिन 12 बजे से संध्या 6 बजे)

आवरण
तारक नाथ राय

इस अंक में

भारतीय ज्ञान में औपनिवेशिक सेंध : **संपादकीय** 5

कहानियां

तुम अभी मरोगे नहीं रामप्रसाद : **सैली बलजीत** 12
ये जिंदगानियां : **हुस्न तबस्सुम निहां** 20
हिसाब : **लोकमित्र गौतम** 25
उसकी दुनिया : **जितेन ठाकुर** 30
हुसनी : **पार्वती तिर्की** 35
शांति लाउंज : **सुशील कुमार** 41
रायक्का मन्यम : **जुपाक सुभद्रा** (तेलुगु)
(अनुवाद : **गजालू राजू**) 48

कविताएं

सपना भट्ट/पन्ना त्रिवेदी/अनिल गंगल/सारिका भूषण/धर्मपाल महेंद्र जैन/हिमांशु भारद्वाज/मणि मोहन/शचींद्र आर्य/संजीव प्रभाकर 52
मराठी कविताएं : **मेघराज मेश्राम** (अनुवाद : **प्रवीण तुरानकर**) 65

परिचर्चा

समकालीन साहित्य में गांव की अनुपस्थित : **मिथिलेश्वर, अजय तिवारी/अष्टभुजा शुक्ल/भगवानदास मोरवाल/रणेंद्र/प्रवीण कुमार** (प्रस्तुति : **श्रद्धांजलि सिंह**) 67

आलेख

लघु पत्रिका आंदोलन और 'लहर' पत्रिका की भूमिका : **शैलेंद्र चौहान** 91

विश्वदृष्टि

एक सुनहरा पेड़ : अना मारिया मातुते (स्पेनी कहानी)
(अनुवाद : **शाइस्ता प्रवीण**) 95
स्पेनी कविताएं : फ्रांसिस्को मुनोज सोलर
(अनुवाद : **अनीता पंडित**) 99

समीक्षा संवाद

उपन्यास के तीन रूप : **सरोज सिंह**
(अनामिका, वंदना राग और दलपत चौहान की पुस्तकें) 102

सोशल मीडिया 113

विविध

पाठक संसद/किताबें/सांस्कृतिक गतिविधियां 115

लघुकथा

घरौंदा : **राजेंद्र कुमार कनौजिया** 29

बतरस

यादों में अज्ञेय : **कुसुम खेमानी** 118

देश-देशांतर

केदारनाथ अग्रवाल/मोसाब अबू तोहा (फिलिस्तीनी)

मल्टी मीडिया

महाश्वेता देवी : एक मुलाकात

कविताओं में रेखांकन :
संदीप राशिनकर

वागर्थ सदस्यता और बिक्री संपर्क

एक प्रति : 40/-
सामान्य वार्षिक सदस्यता (डाक व्यय सहित) : 450 रुपये
वार्षिक सदस्यता (रजिस्टर्ड डाक) 450+510 = 960 रुपये
त्रैवार्षिक सदस्यता : 1350 रु.। रजिस्टर्ड डाक से = 2880/-
आजीवन : 10,000 रुपये/**(साधारण डाक)** विदेश : **वार्षिक** : 80 डॉलर
भारतीय भाषा परिषद के नाम से चेक या ड्राफ्ट भेजें

एजेंसियों और सदस्यों द्वारा चेक से भुगतान Bharatiya Bhasha Parishad के नाम या Neft द्वारा : Kotak Mahindra Bank, Branch : Loudon Street, A/c no. 8111974982, IFSC Code KKBK0006590 पर भुगतान करें।
भुगतान के बाद एस एम एस या व्हट्सअप कर दें 8910269814 : **मीनाक्षी दत्ता**
जानकारी : कार्यालय के दिन दोपहर 12 बजे से संध्या 6 बजे तक
समय पर भुगतान करने वाली एजेंसियों को ही हम भविष्य में पत्रिका भेज पाते हैं।

● प्रकाशित रचनाओं से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

© सर्वाधिकार सुरक्षित

● वागर्थ से संबंधित सभी विवाद कोलकाता न्यायालय के अधीन होगा।
● वेबसाइट : **www.bharatiyabhashaparishad.org**

वागर्थ प्रबंध प्रभार **: मीनाक्षी दत्ता**
वितरण तथा अन्य कार्य **: अशोक बारीक, बैद्यनाथ कामती, खेत्राबासी बारीक, संतोष सिंह, प्रदीप नायक, प्रेम नायक**

आप क्यू आर कोड स्कैन करके भी **भारतीय भाषा परिषद** के नाम भुगतान कर सकते हैं। भुगतान करने के बाद मोबाइल नंबर सहित संपूर्ण विवरण भेज दें।

संपादकीय

भारतीय ज्ञान में औपनिवेशिक सेंध

आज ही नहीं, अंग्रेजों के काल में भी भारत-संबंधी ज्ञान की होड़ कम नहीं थी। इसका एक नतीजा है 'पूर्व' (ओरियंट, प्राच्य) की कृत्रिम धारणा का निर्माण। 'पूर्व' गढ़ा गया और इसे असभ्य, निरंकुश, इतिहासविहीन साबित किया जाने लगा। इसके साथ 'पश्चिम' भी गढ़ा गया जिसे उपनिवेशित देशों में सभ्यता, आधुनिक विकास और स्वतंत्रता का दूत कहा गया। पूर्व और पश्चिम औपनिवेशिक काल की बनी धारणाएं हैं जो आज तक चल रही हैं।

भारत में उपनिवेशवाद व्यापारिक लूट तक सीमित न था। यह भारतीय ज्ञान में व्यापक घुसपैठ तक विस्तृत था। अर्थात उपनिवेशवाद का राजनीतिक-व्यापारिक रूप के अलावा एक बौद्धिक रूप भी है। हम जानते हैं कि बौद्धिक उपनिवेशवाद आमने-सामने का युद्ध नहीं है। यह दस्तावेजीकरण, अनुसंधान, ग्रंथ प्रकाशन, शिक्षा, इतिहास लेखन और कई अन्य संस्थाओं के जरिए भ्रांतियों का ऐसा जाल बिछाना है जो एक समय विद्वत्ता के रूप में देखा जाता था। यह उपनिवेशवाद द्वारा देश पर राजनीतिक आधिपत्य के साथ लोगों के दिलोदिमाग पर बौद्धिक-सांस्कृतिक आधिपत्य कायम करना था।

प्राचीन साहित्य में 'कीट-भृंगी न्याय' एक खास मामला है। मजबूत भौंरा छोटे-छोटे कीट पर चढ़कर इतना भनभनाता है कि कीट अपनी आवाज खोकर भौंरा जैसा बोलने लगता है! चार्ल्स ट्रेवेलियन ने 1838 में लिखा था, 'देर-सबेर हमें यदि यहां से जाना भी पड़ा तो भारत के लोगों का इतना यूरोपीयकरण हो चुका होगा कि हमारा उनसे आधिपत्यपूर्ण संपर्क बना रहेगा। भारतवासियों की रुचि यूरोपीय तौर-तरीकों में ढलती जाएगी।' (एजुकेशन ऑफ इंडियन पीपुल)। उसका भरोसा अंग्रेजी शिक्षा पर था, 'पाश्चात्य शिक्षा पाए हुए युवा स्वाधीनता के प्रयत्न बंद कर देते हैं।' (वही)। हम देख सकते हैं कि 21वीं सदी में पहुंचकर भी बौद्धिक उपनिवेशवाद से छुटकारा नहीं है।

ऐसा नहीं है कि प्राचीन अतीत में अतीत की व्याख्या-पुनर्व्याख्या नहीं हुई। वाल्मीकि, बुद्ध, कालिदास, भवभूति, रामानुज, रामानंद, सूर, कबीर, मीरा, तुलसी के सामने भी चुनौती थी कि अतीत को कैसे देखें और उससे क्या लें-क्या छोड़ें। इस भ्रम से निश्चय ही निकलना होगा कि अतीतबोध स्थिर है।